HIN3B18b Littérature dalit

हीरा डोम / अछूत की शिकायत (**सरस्वती**, १९१४ / extrait de Dalit vimars' kî bhûmikâ, Kanwal Bhâratî, Itihas Bodh Prakashan, Ilahabad, 2002 ; version complète disponible dans **दलित विमर्श और साहित्य**, Dwarika Prasad Charumitra Editor, Sancha Prakashan, Delhi, 1ère édition 2009, pp 13-14)

हमनी के राति दिन दुखवा भोगत बानी,
हमनी के सहेबे से मिनती सुनाइबि । (साहिब)
हमनी के दुख भगवनओं न देखताजे,
हमनी के कबले कलेसबा उठाइबि ।
पदरी सहेब के कचहरी मे जाइबिजां,
बेधरम होके रंगरेज बनि जाइबि । (अंगरेज)
हाय राम, धरम न छोड़त बनत बाजे,
बेधरम होके कैसे मुंहवा देखाइबि ॥१॥
खंभवा के फारि पहलाद के बचवले जां, (प्रह्लाद)
ग्राह के मुँहं से गजराज के बचवले ।
धोति जुरजोधना के भइया छोरत रहे,
परगट होके तहां कपड़ा बढ़वले ।
मरले रबनवां के पतले भभिखना के,
कानी अंगुरी पै धैके पथरा उठवले ।
कहवां सुतल बाटे सुनत न बाटे अब,
डोम जानि हमनी के छुए से डेरइले ॥२॥ ../..
हमनी के इनरा के निगिचे न जाइले जां,
पांके में से भरि भरि, पियतानी पानी ।
पनही से पिटि पिटि हाथ गोड़ तुरि दैलैं,
हमनी के इतनी काही के हलकानी ॥५॥

स्वामी अछूतानंद "हरिहर" : मनुस्मृति हमको जला रही है (क़व्वाली)

(१८७९-१९३३)

निसदिन मनुस्मृति ये, हमको जला रही है ।
ऊपर न उठने देती, नीचे गिरा रही है ।
ब्राह्मण व क्षत्रियों को सबको बनाया अफसर,
हमको पुराने उतरन पहनो बता रही है ।
दौलत कभी न जोड़े, गर हो तो छीन लें वह,
फिर नीच कह हमारा दिल भी दुखा रही है ।
कुत्ते व बिल्ली, मक्खी से भी बना के नीचा,
हा शोक ! ग्राम बाहर हमको बसा रही है ।
हमको बिना मजूरी बैलों के संग जोते,
गाली व मार उस पर हमको दिला रही है ।

लेते बेगार, खाना तक पेट भर न देते,
बच्चे तड़पते भूखों, क्या जुल्म ढा रही है ।
ए हिन्दू कौम सुन ले, तेरा भला न होगा,
हम बेकसों को "हरिहर" गर तू रुला रही है ॥

आदि–वंश का डंका

आदि हिन्दू का डंका बजाते चलो ।
कौम को नीन्द से जगाते चलो ॥
हम जमीं हिन्द के आदि सन्तान हैं,
और आजाद हैं, खूब सज्ञान हैं,
अपने अधिकारों, पर दे रहे ध्यान हैं ।
संगठन कौम में अब बढ़ाते चलो ।
आदि हिन्दू का डंका बजाते चलो ॥
आर्य-शक-हूण बाहर से आये यहाँ ।
और मुसलिम ईसाई जो छाये यहाँ ।
सब विदेशी हैं कब्जा जमाये यहाँ ।
खोलकर सारी बातें बताते चलो ।
आदि हिन्दू का डंका बजाते चलो ॥
दो विदेशी फक़त और हम आठ हैं,
हम हैं बहुजन मगर, उनको ही ठाठ हैं,
हमको पढ़ने-पढ़ाने यही पाठ हैं,
ख्वाबे-गफलत का परदा हटाते चलो ।
आदि हिन्दू का डंका बजाते चलो ॥
इन लुटेरों के चक्कर में तुम मत पड़ो,
कायदे की लड़ाई है, डटकर लड़ो,
उठ खड़े हो कमर बाँध हक पर अड़ो,
काम बिगड़े हुए सब बनाते चलो ।
आदि हिन्दू का डंका बजाते चलो ॥

ग़ज़ल चेतावनी

पुरखे हमारे थे बादशाह, तुम्हें याद हो कि न याद हो ।
अब हिंद में हम हैं तबाह, तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥
इतिहास में जो नामवर, थे वीर पराक्रमी धनुर्धर ।
थे सभ्यता में अग्रसर, तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥
आए थे अर्य यहाँ नये, हमको हजम जो कर गये ।
छल-बल से वे मालिक भये, तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥
यदि खून में कुछ जोश हो, ओ बेहोश कौमो, जो होश हो ।
तुम क्यों पड़े ख़ामोश हो, तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥

अब भी हमारी राय लो, सभा आदि हिन्दू बनाय लो ।
इतिहास-ज्ञान जगाय लो, तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥
"हरिहर" समय अनुकूल है, अब भी न चेतो, भूल है ।
गहरी तुम्हारी मूल है, तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥

प्राचीन हिंदवाले (ग़ज़ल) हम भी थे कभी अफ़ज़ल, प्राचीन हिन्द वाले ।
अब हैं ग़ुलाम निर्बल, प्राचीन हिन्द वाले ॥
इतिहास हैं बताते, है शुद्ध खूं हमारा ।
पर अब हैं शूद्र सड़ियल, प्राचीन हिन्द वाले ॥
बाहर से क़ौम आई, बसने को जो यहाँ पर ।
सब ले लिया था छलबल, प्राचीन हिन्द वाले ॥
वे ही हैं द्विजाती ये, पर खल्त-मल्त हैं सब ।
छाती के बने पीपल, प्राचीन हिन्द वाले ॥
अकड़े जो गये पकड़े, जकड़े गये वह छल से ।
फिर दास बने थल-थल, प्राचीन हिन्द वाले ॥
तन-मन व धन निछावर, कर दोगे कौम पर गर ।
"हरिहर" बनोगे परिमल, प्राचीन हिन्द वाले ॥
शैर - तवारीख़ें बताती हैं हर इक कौमों की हालत को ।
गिरी हैं या उठीं कैसे, ज़रा इतिहास पढ़ देखो ॥

शूद्रो ग़ुलाम रहते, सदियाँ गुज़र गई हैं ।
ज़ुल्मो सितम को सहते, सदियाँ गुज़र गई हैं ।
अब तो ज़रा विचारो, सदियाँ गुज़र गई हैं ।
अपनी दशा सुधारो, सदियाँ गुज़र गई हैं ॥

वेद में भेद छिपा था (ग़ज़ल)
वेद में भेद छिपा था, हमें मालूम न था ।
हाल पोशीदा रखा था, हमें मालूम न था ॥ वेद...
क़दीम वासी हैं हम, हिन्द के असली स्वामी ।
हमारा राज यहाँ था, हमें मालूम न था ॥ वेद...
विष्णु ने छलके बली, देश ले लिया जब से ।
वंश ये नीचे गिरा था, हमें मालूम न था ॥ वेद...
ब्राह्मणी पोथी पुराणों में, निरी भर उलझन ।
फसाना जाली रचा था, हमें मालूम न था ॥ वेद...
मनु ने सख़्त थे क़ानून बनाए "हरिहर" ।
पढ़ाना क़तई मना था, हमें मालूम न था ॥ वेद...